

रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 16

बाढ़ कथा (जनरल 6-9) और मेसोपोटामिया समानताएं

1. बेबीलोनियाई बाढ़ की कहानियाँ समानताएँ

मेसोपोटामिया वृत्तांत और बाढ़ के बाइबिल रिकॉर्ड के बीच हमने देखा कि दोनों कहानियों की सामान्य संरचना एक जैसी है लेकिन विवरण में अंतर है। मैं इसे थोड़ा और स्पष्ट करना चाहता था। हमने देखा कि दोनों को एक महान जहाज बनाने के लिए कहा गया था, लेकिन उनके आयाम अलग-अलग हैं और मेरे पास आपको यह बताने के लिए कुछ और उदाहरण हैं कि यह कैसे काम करता है। जहाँ तक जहाज़ पर रहने वालों का सवाल है, दोनों कहानियाँ कहती हैं कि नायक और उसके परिवार के साथ-साथ जानवरों और पक्षियों को जहाज़ के माध्यम से विनाश से बचाया जाता है। लेकिन जब आप फिर से विवरण पर आते हैं तो मतभेद होते हैं जैसा कि हमने यहां पहले ही देखा है कि बाइबिल के वृत्तांत में प्रमुख व्यक्ति, जुइसुद्र, उत्तापिष्टिम, अत्राहासिस और फिर नूह के नाम काफी भिन्न हैं और इनके बीच कोई व्युत्पत्ति संबंधी संबंध नहीं दिखता है। नूह नाम और ये अन्य नाम। इसके अलावा, बाइबिल के वृत्तांत में जहाज पर बचाए गए लोगों की संख्या कम है। नूह के साथ उसकी पत्नी और तीन बेटे और उनकी पत्नियाँ भी थीं। गिलगमेश महाकाव्य में उत्तापिष्टिम की चर्चा की गई है और मैंने पाठ से जहाज पर सवार उसके परिवार और रिश्तेदारों के साथ-साथ सभी कारीगरों और नाविकों का भी उल्लेख किया है। तो हमारे पास उनके सभी परिवार और रिश्तेदार और सभी कारीगर और एक नाविक हैं जिनके नाम दिए गए थे, इसलिए यह पर्याप्त संख्या में लोगों की तरह लगता है। अत्राहासिस महाकाव्य में नायक अपने परिवार, रिश्तेदारों और कारीगरों को जहाज पर ले आया। सुमेरियन संस्करण में जुइसुद्र अपने रिश्तेदारों, पत्नी, बच्चों और करीबी दोस्तों को जहाज पर ले गया। तो ऐसा लगता है कि बाइबिल का विवरण कम संख्या में लोगों तक ही सीमित है इसलिए फिर से विवरण में अंतर है।

पक्षी घटना एक और उदाहरण है जहां पक्षियों को यह निर्धारित करने के लिए छोड़ा गया था कि क्या परिस्थितियाँ जहाज़ छोड़ने के लिए उपयुक्त हैं। मेसोपोटामिया और बाइबिल दोनों

कहानियों में ऐसा है, लेकिन फिर भी विवरण में मतभेद हैं। बेबीलोन की कहानी में पक्षियों की तीन मुक्तिएँ हैं और बाइबिल की कहानी में चार हैं। कहा जाता है कि उत्तानपिष्टिम और नूह दोनों ने एक बार में एक ही पक्षी को छोड़ा था, जबकि जुइसुद्रा ने हर बार एक ही पक्षी को छोड़ा था। कहा जाता है कि उत्तानपिष्टिम ने इसी क्रम में एक कबूतर, एक अबाबील और एक कौवे को छोड़ा था। जबकि कहा जाता है कि नूह ने एक कौआ और तीन कबूतर छोड़े थे। वहां विरोधाभास पर ध्यान दें, नूह ने कौवे को पहले छोड़ा और उत्तानपिष्टिम ने कौवे को सबसे बाद में छोड़ा। मुझे नहीं लगता कि मैंने अभी तक किसी पुस्तक का उल्लेख किया है, लेकिन यह आपकी ग्रंथ सूची पर है अलेक्जेंडर हिडेल, जिन्होंने बेबीलोन निर्माण की कहानी की तुलना बाइबिल की निर्माण कहानियों से की है, ने *द गिलगमेश एपिक एंड ओल्ड टेस्टामेंट पैरेलल्स नामक पुस्तक भी लिखी है*, जो बेबीलोनियन खाते की तुलना में बाइबिल के खाते का एक अच्छा अध्ययन है। मेरा मानना है कि यह आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ दस पर अंतिम प्रविष्टि के बगल में है यह विशेष घटना. शीर्षक कहता है कि उत्तानपिष्टिम की ओर से तर्क में गलती है क्योंकि रैवेन एक अधिक दयालु पक्षी है, तार्किक प्रगति वही होगी जिसका उपयोग नूह ने किया था; अधिक हार्दिक पक्षी पहले कबूतर बाद में जबकि उत्तानपिष्टिम ने इसे पलट दिया है।

समानताओं की व्याख्या किसी भी मामले में विस्तार से मतभेद हैं तो फिर हम इस प्रश्न पर आते हैं कि हमने पिछली कक्षा को समाप्त कर दिया था, बेबीलोनियन और बाइबिल की कहानी के बीच संबंध के बारे में हम क्या कहते हैं? हम समानताएं और अंतर कैसे समझाएं? मुझे लगता है कि उस प्रश्न पर हमारे पास तीन प्रतिक्रियाएँ हैं और मैं उनका उल्लेख करूँगा और उन पर संक्षेप में चर्चा करूँगा। सबसे पहले, मेसोपोटामिया का विवरण प्रोटो-सेमिटिक/बाइबिल के विवरण से लिया गया है। मैं एक मिनट में फिर से चर्चा करूँगा कि इसके बारे में मेरा क्या मतलब है। दूसरा, बाइबिल का विवरण मेसोपोटामिया के विवरण से लिया गया है, यह इसे उलट देता है। तीसरा, दोनों एक ही मूल स्रोत पर वापस जाते हैं।

एक। मेसोपोटामिया खाता एक प्रोटो-सेमिटिक/बाइबिल खाते से उधार लिया गया था सबसे

पहले, मेसोपोटामिया खाता एक प्रोटो-सेमिटिक/बाइबिल खाते से उधार लिया गया था। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि मेसोपोटामिया के वृत्तांत कम से कम 2000 ईसा पूर्व अस्तित्व में थे। बेबीलोनियाई संस्करण के लगभग 2000 ईसा पूर्व के होने के बारे में बहुत अधिक विवाद नहीं है, जबकि बाइबिल का वृत्तांत लगभग 1200-1400 ईसा पूर्व का होगा जो मूसा और उसके लेखन से जुड़ा है। पेंटाटेच का सापेक्ष डेटिंग मौजूदा पाठ से पता चलता है कि मेसोपोटामिया का खाता पहले का है। अब यही कारण है कि कई लोगों ने कहा है कि बाइबिल का विवरण मेसोपोटामिया के विवरण से लिया गया है। हालाँकि आपकी ग्रंथ सूची में आप पृष्ठ दस के निचले भाग में नीचे से तीसरी प्रविष्टि देखेंगे, क्ले की *द ओरिजिन ऑफ बाइबिलिकल ट्रेडिशन*, येल यूनिवर्सिटी प्रेस 1923। उस खंड में क्ले पृष्ठ 165 और 166 पर यह बयान देता है। वह तर्क कहता है यह आरोप लगाया गया है कि कहानी की उत्पत्ति सुमेरियों से हुई है क्योंकि इसका सबसे प्रारंभिक संस्करण सुमेरियन भाषा में पाया गया है, यह कहना अधिक अंतिम नहीं है कि शेक्सपियर का काम जर्मन मूल का है क्योंकि जर्मन भाषा में लिखी गई इसकी एक प्रति मिली थी बर्लिन में। आप देखिए, मान लीजिए कि अब से 2000 साल बाद लोग हमारी सभ्यता की खुदाई कर रहे थे और उन्हें जर्मन में लिखी शेक्सपियर की एक प्रति मिली, जो शेक्सपियर की सबसे पुरानी मौजूदा प्रति है। यह पूरी तरह से साबित नहीं होता। ऐसा होता है कि आपके पास उस कहानी का सबसे प्रारंभिक संस्करण होता है। क्ले का प्रस्ताव है कि गिलगमेश महाकाव्य मूल रूप से एक एमोराइट किंवदंती में लिखा गया था जो लगभग 2000 ईसा पूर्व एकेडियनीकृत हो गया था। अब एमोराइट्स मेसोपोटामिया के पश्चिम में रहने वाले सेमिटिक लोग थे। उनका मानना है कि यह पूरी कहानी मेसोपोटामिया में लाई गई थी और लगभग 2000 ईसा पूर्व में इसका एकेडियनीकरण किया गया था। उन्होंने कहा कि यह एक एमोराइट किंवदंती है जिसे सेमाइट्स पश्चिम से लाए थे। अब यह क्ले का प्रस्ताव है, लेकिन अगर आपको लगता है कि यहां प्रोटो-सेमिटिक खाता सुमेर में है और वही प्रोटो-सेमिटिक खाता बाइबिल के खाते में जा रहा है, तो हो सकता है कि उस खाते से आपको यह एकेडियनाइज्ड संस्करण मिल जाए। परंपरा में प्रोटो-सेमिटिक खाते का विच्छेद इस रूप में सामने आता है कि हमारे पास बाइबिल का खाता है और कहने का तात्पर्य यह है कि एकेडियन प्रोटो-सेमिटिक/बाइबिल खाते से

लिया गया है। सिर्फ इसलिए कि आपके पास एक पुराना दस्तावेज़ है जो इस कहानी का एकेडियन है, इसका मतलब यह नहीं है कि बाइबिल का विवरण मेसोपोटामिया के विवरण से लिया गया है। वह एमोराइट नामों और शब्दों के आधार पर बयान देते हैं, जो उन्हें लगता है कि गिलगमेश महाकाव्य में समझे जाने योग्य हैं और यह भाषाई चर्चा में आता है, लेकिन उन्हें लगता है कि इस बात के सबूत हैं कि इसे एकेडियनाइज़ किया गया है और मूल रूप से एमोराइट था।

बी। इब्रियों ने मेसोपोटामिया से अपना खाता उधार लिया था

निःसंदेह दूसरा दृष्टिकोण काल्पनिक है। वास्तव में हमारे पास प्रोटो-सेमेटिक खाते का कोई पुख्ता सबूत नहीं है। हमारे पास निश्चित रूप से कोई टैबलेट या दस्तावेज़ नहीं है इसलिए यह कुछ हद तक सैद्धांतिक है। दूसरा विचार यह है कि इब्रानियों ने अपना विवरण मेसोपोटामियावासियों से उधार लिया था। तो यहाँ आपके पास यह मेसोपोटामिया खाता या एकेडियन खाता होना चाहिए था और इब्रानियों ने इसे उधार लिया था, इसलिए आपके पास मेसोपोटामिया खाते से प्राप्त बाइबिल खाता है। निःसंदेह, आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं, यदि ऐसा ही होता है, तो क्या वास्तव में कभी उस तरह की बाढ़ आई थी जिसका वर्णन हमने बाइबिल के वृत्तांत में किया है या क्या यह मेसोपोटामिया का वृत्तांत है? इसके पीछे क्या है ये कहना मुश्किल है। यह वैसा नहीं लगता जैसा बाइबिल की कहानी में बाढ़ का है। फिर भी इसका कंकाल है। हिडेल इस प्रस्ताव पर टिप्पणी करते हैं और वह पृष्ठ 268 पर बयान देते हैं, “जैसा कि निर्माण कहानी के मामले में हम अभी भी नहीं जानते हैं कि जलप्रलय की बाइबिल और बेबीलोनियाई विरासतें ऐतिहासिक रूप से कैसे संबंधित हैं। उपलब्ध साक्ष्य इस बिंदु से परे कुछ भी साबित नहीं करते हैं कि उत्पत्ति और बेबीलोनियन संस्करणों के बीच कोई आनुवंशिक संबंध है। दोनों मामलों में कंकाल एक ही है, लेकिन मांस और रक्त और, सबसे बढ़कर, विवरण और आत्मा अलग-अलग हैं। यहीं पर हमें हिब्रू और मेसोपोटामिया की कहानियों के बीच सबसे दूरगामी मतभेद मिलते हैं। मुझे यकीन नहीं है कि इस तरह की संरचना आपको इस बात का पर्याप्त स्पष्टीकरण देती है कि मतभेद क्यों हैं। लेकिन यदि बाइबिल की सामग्री केवल मेसोपोटामिया से उधार ली गई थी, तो आप उन्हें जिस हद तक पाते हैं उसमें अंतर क्यों है?

सी। वॉन रैड का विश्लेषण: एक सामान्य स्रोत के साथ दोनों स्वतंत्र जेनेसिस पर वॉन रैड की टिप्पणी में, वॉन रैड ऐसे व्यक्ति हैं जिनके कई बिंदुओं पर हम उनके निष्कर्षों पर आपत्ति उठा सकते हैं, लेकिन वह पृष्ठ 119 पर कहते हैं, मुझे लगता है कि यह आपकी ग्रंथ सूची में पृष्ठ 11 के शीर्ष पर है, “आज बेबीलोन की कहानियों की बाइबिल परंपराओं के संबंध पर बेबेल/बाइबिल विवाद के चरम के चालीस साल बाद ऐसी बाढ़ आ गई है जैसे कि गिलगमेश महाकाव्य कमोबेश बंद हो गया है। दोनों संस्करणों के बीच एक भौतिक संबंध निश्चित रूप से मौजूद है, लेकिन अब कोई यह नहीं मानता है कि यह बेबीलोनियन पर बाइबिल परंपरा की प्रत्यक्ष निर्भरता है। उसे लगता है कि बहुत ज्यादा अंतर है। आप बेबीलोन पर बाइबिल सामग्री की प्रत्यक्ष निर्भरता नहीं मान सकते। वह जो प्रतिस्थापित करता है वह इसका अधिक परिष्कृत संस्करण है। उनका कहना है कि दोनों संस्करण अभी भी पुरानी परंपरा की स्वतंत्र व्यवस्था हैं जो शायद सुमेरियन से उत्पन्न हुई है।

अब यह एक पुरानी परंपरा की स्वतंत्र व्यवस्था की तरह लगता है, लेकिन फिर वह कहते हैं कि इज़राइल को अपने आप्रवासन के समय कनान में बाढ़ परंपरा का सामना करना पड़ा और उन्होंने इसे अपने धार्मिक विचारों में आत्मसात कर लिया। यह शुद्ध परिकल्पना है जिसमें कोई सबूत नहीं है। वह इसे सिर्फ एक बयान के तौर पर पेश करते हैं। "इज़राइल को अपने आप्रवासन के समय कनान में बाढ़ की परंपरा का सामना करना पड़ा और उन्होंने इसे अपने धार्मिक विचारों में आत्मसात कर लिया।" कोई कनानी बाढ़ की कहानी नहीं है, इसलिए वह इस धारणा पर समानताएं समझाने का प्रयास कर रहा है कि इब्रानियों ने जो अपनाया होगा वह अवश्य ही होगा। लेकिन उनका दूसरा सुझाव, जैसा कि आप जानते हैं, वह प्रत्यक्ष निर्भरता नहीं है, लेकिन उन्हें लगता है कि वे कहीं न कहीं एक सामान्य स्रोत पर वापस जा सकते हैं। क्या यह उचित है मुझे फिर से आश्चर्य होता है, कौन सा सामान्य स्रोत? हमारे पास इसके लिए बहुत सारे सबूत नहीं हैं। यह ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हम सीधे तौर पर बात नहीं कर सकते। धर्मशास्त्र से परे बाढ़ के प्राकृतिक और ऐतिहासिक पहलुओं के बारे में उनका कहना है कि वह स्वतंत्र राय व्यक्त करने के लिए आश्वस्त नहीं हैं। हालाँकि यह कहा जा सकता है कि प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने भी इस प्रचलित स्पष्टीकरण पर

विचार नहीं किया है कि दुनिया में बाढ़ की असंख्य कहानियाँ स्थानीय आपदाओं से उत्पन्न हुई हैं। एक ओर, भारतीयों, फारसियों, अफ्रीकियों, आस्ट्रेलियाई, एस्किमो और अमेरिका के भारतीयों आदि के बीच गाथा का वितरण। दूसरी ओर, बारिश के कारण बाढ़ में उल्लेखनीय एकरूपता की धारणा की आवश्यकता है। वास्तविक ब्रह्मांडीय अनुभव एक आदिम स्मृति है जो निश्चित रूप से अक्सर धूमिल हो जाती है और अक्सर नए जीवन में लायी जाती है और बाद में स्थानीय बाढ़ के कारण ही संशोधित होती है। वह जो कह रहे हैं वह इन सभी राष्ट्रीयताओं और स्थानीय लोगों में बाढ़ की कहानियों के वितरण की सीमा के साथ-साथ कहानियों की एकरूपता से पता चलता है कि इस सब के पीछे किसी प्रकार का वास्तविक ब्रह्मांडीय अनुभव रहा होगा।

डी। राष्ट्रीय घटना का सामान्य स्रोत अब तीन संभावनाओं में से तीसरा राष्ट्रीय घटना का सामान्य स्रोत है। यहां आप कहते हैं कि बाढ़ आई थी और उसकी परंपरा मेसोपोटामिया तक आती है और दूसरी परंपरा बाइबिल सामग्री तक पहुंच जाती है। इसके अलावा, वास्तव में जो हुआ उसका पर्याप्त स्मरण है जो समानताओं को स्पष्ट करेगा और अंतरों को स्पष्ट करने के लिए प्रसारण में पर्याप्त विविधताएँ हैं। वे दोनों स्वतंत्र रूप से एक वास्तविक घटना पर वापस जाते हैं जो निश्चित रूप से एक संभावना है। वॉन रैड सुझाव देते हैं कि इस व्यापक उपयोग को समझाने के लिए इस परंपरा के पीछे कुछ न कुछ रहा होगा और मुझे लगता है कि अक्सर रूढ़िवादी लोगों ने ऐतिहासिकता पर बहस करने के लिए व्यापक और समान चरित्र वाली बाढ़ की कहानियों की ओर इशारा किया है। उस तर्क में कुछ दम है लेकिन आपको उस तर्क से सावधान रहना होगा और मेरे कहने का कारण यह है। यदि आप अंतिम प्रविष्टि पृष्ठ दस *क्रिश्चियन व्यू ऑफ एंथ्रोपोलॉजी एंड मॉडर्न साइंस एंड क्रिश्चियन फेथ* पृष्ठ 187 के तहत अपनी ग्रंथ सूची को देखते हैं, तो वे बाढ़ की कहानी के व्यापक वितरण की बात करते हैं और कहते हैं कि यह बाइबिल की बाढ़ की वास्तविकता को साबित करने या साबित करने के लिए सोचा गया था। एक ही राष्ट्र से समस्त मानव जाति के वंशज होने का प्रमाण बनें जिसने एक बार इसका अनुभव किया था। लेकिन उस विचार पर टिप्पणी करते हुए मानवविज्ञानी कहते हैं कि अक्सर इस तरह की कहानियाँ प्रवास के बिना ही जुड़ जाती हैं और वे

सांस्कृतिक भाषाई रेखाओं के पार भी जुड़ सकती हैं। वे बताते हैं कि बाढ़ की कहानी के अलावा अन्य व्यापक किंवदंतियाँ भी हैं जो आश्चर्यजनक रूप से एक समान हैं। ऐसा ही एक मामला जादुई उड़ान या बाधा उड़ान है, जो दुनिया भर में विशेष रूप से यूरोप, एशिया, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका और इंडोनेशिया में आदिवासी और ऐतिहासिक दोनों लोगों के बीच वितरित किया जाता है। इस कहानी में एक विशिष्ट संरचना है जिसमें एक राक्षस से दूर उड़ान और कंधे पर वापस फेंकी गई वस्तुएं बाधाएं पैदा करती हैं। उदाहरण हैं, एक पत्थर जो पहाड़ बन जाता है, एक शंकु जो झाड़ी बन जाता है, और तेल जो जलाशय बन जाता है। विवरण हमेशा केवल छोटे-मोटे बदलावों के साथ दिए जाते हैं जैसे झाड़ियों के लिए जंगल, और तेल के लिए कुछ अन्य तरल। फिर कथन है कि यह कथा प्राचीन, व्यापक और एकरूप है। बाढ़ विषयों की बहुलता भी इसी तरह प्राचीन व्यापक है लेकिन इतनी समान नहीं है। सामान्य तौर पर मानवविज्ञानी महसूस करते हैं कि जादुई उड़ान और विभिन्न बाढ़ वृत्तांतों दोनों का व्यापक और भौगोलिक रूप से निरंतर वितरण एक समूह की कहानी के मूल केंद्रों से दूसरे समूह तक धीरे-धीरे फैलने के कारण है। बाढ़ की किंवदंतियों की सार्वभौमिक व्यापकता को बाढ़ की वास्तविक वास्तविकता का प्रमाण नहीं माना जा सकता है या कि जिन लोगों के पास बाढ़ के वृत्तांत बाइबिल के वृत्तांतों के समान हैं, उन्होंने उन्हें समय और स्मृति के लिए अपनी पीढ़ियों के माध्यम से पारित किया है। यदि ऐसा है, तो जादुई उड़ान की घटना का एक मजबूत सबूत है, इसलिए आपको इस बात से सावधान रहना होगा कि आप उस तर्क का उपयोग कैसे करते हैं। कहानियों में एक घटना हो सकती है कि कहानी आती है और फिर शाखाएं निकलती हैं और तब तक फैलती रहती हैं जब तक कि आपके पास यह उस तरह का बहुत शानदार न हो जाए। वे जो कह रहे हैं वह यह है कि एक कहानी यहां शुरू हो सकती है और इस तरह प्रसारित हो सकती है और यह जरूरी नहीं कि यह ऐतिहासिकता का प्रमाण हो, सिर्फ इसलिए कि यह कई लोगों के पास है। यह प्रसार द्वारा भाषाई, जातीय और सांस्कृतिक रेखाओं को पार कर सकता है। कोई इसे प्राप्त करता है और इसे अन्य लोगों के पास ले जाता है, कोई इसे कहीं और ले जाता है और यह जरूरी नहीं कि ऐतिहासिकता साबित हो।

बाढ़ की कहानियों के बारे में मुझे जो बात चौंकाने वाली लगती है, वह यह है कि बहुत सारे

लोगों में यह समस्या होती है और यह आम तौर पर एक समान और व्यापक होती है। यह उस बारे में कुछ कह सकता है जैसा वॉन रैड ने ऐतिहासिकता के बारे में कहा था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप इसे ऐतिहासिकता के किसी भी प्रकार के प्रमाण के रूप में उपयोग कर सकते हैं। कोई प्रश्न या टिप्पणी? मेरा मानना है कि इनमें कुछ भारतीय भी हैं। वे विवरण में फिर से भिन्न हैं लेकिन वे करीब हैं। मेरा मानना है कि बाढ़ भूविज्ञान इस पाठ्यक्रम के दायरे से बाहर है। मुझे नहीं लगता कि यह कोई बाइबिल संबंधी समस्या है। मुझे लगता है कि यह एक वैज्ञानिक प्रश्न है, लेकिन यदि आप उस सामग्री में से कुछ को पढ़ना चाहते हैं, तो मैंने आपको किताबों और दोनों पक्षों के कई अन्य स्रोत दिए हैं, जो पृष्ठ दस के मध्य बी1 के नीचे हैं।

6. डेलुवियन विश्व को नियंत्रित करने वाली स्थितियाँ a. मानव और पशु जीवन के प्रसार और रखरखाव के लिए दिशा-निर्देश ठीक है, चलिए 6 पर चलते हैं। 6. है: "जलप्रलय के बाद की दुनिया को नियंत्रित करने वाली स्थितियाँ।" हम पाते हैं कि अध्याय नौ में प्रथम सत्रह श्लोक हैं। मैं आपको कुछ उप-बिंदु देना चाहता हूँ जो आपकी रूपरेखा शीट पर नहीं थे। तो ए. 6 के अंतर्गत पहले सात छंदों में "मानव और पशु जीवन के प्रसार और रखरखाव के लिए निर्देश" हैं। तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीर्वाद दिया, और उनसे कहा, 'फूलो-फूलो, और संख्या में बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ।

तेरा भय और भय पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पक्षियों, और भूमि पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियों पर छा जाएगा; वे तुम्हारे हाथ में दिये गये हैं। जो कुछ जीवित और गतिशील है वह तुम्हारा भोजन होगा। जैसे मैंने तुम्हें हरे पौधे दिये थे, वैसे ही अब मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ। परन्तु तुम्हें वह मांस नहीं खाना चाहिए जिसमें जीवनरक्त अभी भी मौजूद है। और मैं तेरे जीवनरक्त का अवश्य हिसाब मांगूंगा। मैं हर जानवर से हिसाब मांगूंगा. और मैं प्रत्येक मनुष्य से उसके साथी मनुष्य के जीवन का हिसाब भी मांगूंगा। जो कोई मनुष्य का लोहू बहाता है, उसका लोहू मनुष्य ही के द्वारा बहाया जाएगा; क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया है। जहाँ तक तुम्हारी बात है, फूलो-फूलो, और गिनती में बढ़ो; पृथ्वी पर बढ़ो, और उस पर

बढ़ो।"

तो आपके पास मानव और पशु जीवन के प्रसार और रखरखाव के लिए निर्देश हैं। सबसे पहले आप ध्यान दें कि नूह से कहा गया है कि वह फूले-फले, और बढ़े और पृथ्वी में भर जाए। कहीं इसमें कोई संदेह न रह जाए। प्रभु ने वही दोहराया जो उन्होंने आदम और हव्वा से कहा था। यह प्रभु को प्रसन्न करता है कि मनुष्य फलदायी और बहुगुणित हो, भले ही उसने मानवजाति पर यह निर्णय लाया हो। अब पृथ्वी को भरना नूह और उसके परिवार का कार्य था।

बी। पशुओं पर मनुष्य का प्रभुत्व पुनः पुष्ट हो गया है दूसरे, पशुओं पर मनुष्य का प्रभुत्व पुनः पुष्ट हो गया है। वह प्रभुत्व उत्पत्ति 1:28 में फिर से पतन-पूर्व स्थिति में वापस दे दिया गया था, इसकी पुनः पुष्टि की गई है। यहाँ कहा जाता है कि जानवर मनुष्य के भय से नियंत्रित होते हैं। इसके अलावा यह कथन स्पष्ट है कि मनुष्य के खाने के लिए जानवर जायज़ हैं। पद 3, "जितनी जीवित वस्तुएँ हैं वे सब तुम्हारे लिये भोजन ठहरेगी, जैसे मैं ने सब वस्तुएं हरी घास के समान तुम्हें दे दी हैं।" यदि आप 1:28 पर वापस जाएँ तो वहाँ जानवरों पर प्रभुत्व दिया गया है और उत्पत्ति 3:21 में प्रभु जानवरों की खाल से कोट बनाते हैं। उत्पत्ति 4:4 में आपने पढ़ा कि हाबिल अपने झुंड के पहले बच्चों को लाया था और यह तथ्य कि प्रभु ने हाबिल को उसकी भेंटों का सम्मान दिया था। इसलिए पिछले संकेत हैं कि जानवरों की जान मनुष्य की सेवा के लिए ली गई थी, आप कह सकते हैं कि बलि चढ़ाना। अगला प्रश्न, क्या नूह के समय से पहले मनुष्य जानवरों का मांस खाता था? इसके बारे में पवित्रशास्त्र में किसी न किसी रूप में कोई स्पष्ट कथन नहीं है। कुछ लोगों का दावा है कि इस समय से पहले केवल सब्जियाँ ही खाई जाती थीं। मुझे यकीन नहीं है कि आप इसे हठधर्मिता से कह सकते हैं, आप वास्तव में चुप्पी से बहस कर रहे हैं। प्रश्न वास्तव में संबोधित नहीं है। केल्विन अपनी टिप्पणी में कहते हैं, "चूंकि इसका कोई परिणाम नहीं है, उनका मतलब यह है कि मैं इस विषय पर कुछ भी पुष्टि नहीं करता हूँ।"

फिर भी अतिरिक्त योग्यता पद 4 में है "जिस मांस का लोहू है वह प्राण समेत न खाना।" दूसरे शब्दों में, जानवरों का खून बहाया जाना था और खाने से पहले खून जानवर से बाहर निकलना

था, इसलिए फिर सवाल उठता है कि उस विशेष योग्यता का उद्देश्य क्या था। क्या उसे कोषेर माना गया? हाँ वह इसका हिस्सा है। फिर उस प्रश्न का उत्तर पाठ में नहीं दिया गया है। विभिन्न सुझाव आये हैं। लैविकस पर वेन्हम की टिप्पणी में वे कहते हैं कि महत्व मायावी है क्योंकि आपको लैविकस के रक्त में इसका और संदर्भ मिलता है, लेकिन उनका कहना है कि शायद यह जीवन के प्रति श्रद्धा को प्रोत्साहित करने के लिए है। जीवन रक्त में है और इसके अलावा यह रक्त ही है जो पाप का प्रायश्चित्त करता है। इसलिए यह पवित्र है और इसे नहीं खाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, यहां उन अध्यादेशों की कुछ प्रत्याशा हो सकती है जो बाद में रक्त बलिदान को नियंत्रित करने और इस शुरुआती समय में रक्त के महत्व को दिखाने के लिए होंगे। फिर, यह कुछ हद तक काल्पनिक है, लेकिन जानवरों को भोजन के लिए मनुष्य को दिया जाता है, हालांकि उन्हें रक्त के साथ उनका उपयोग या खाना नहीं है। दूसरे शब्दों में उनका खून किया जाना चाहिए, न कि केवल गला घोटकर खाया जाना चाहिए।

3. वे फलदायी और बहुगुणित तथा मानव जीवन की पवित्रता वाले हैं

तीसरी बात जो आप पाते हैं वह यह है कि वे फलदायी हैं। उन्हें जानवरों पर प्रभुत्व रखना होगा और जानवरों को खाया जा सकता है। तीसरी बात यह है कि मनुष्य का जीवन पवित्र है क्योंकि जो कोई किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन का उल्लंघन करता है उसे मृत्युदंड देकर ईश्वर मनुष्य के जीवन की रक्षा करता है। श्लोक 6, "जो कोई मनुष्य का लोहू मनुष्य के द्वारा बहाएगा, उसका लोहू परमेश्वर के बनाए हुए मनुष्य के स्वरूप के अनुसार बहाया जाएगा।" मुझे लगता है कि आप वहां जो पाते हैं वह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यह मृत्युदंड के लिए दैवीय अध्यादेश है। यदि कोई किसी दूसरे व्यक्ति की जान लेता है तो ऐसा करने वाले की जान भी ले ली जानी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य भगवान की छवि में बनाया गया है और मनुष्य का जीवन पवित्र है और इसका उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। पुरुषों को यह शक्ति दी गई है कि वे किसी अन्य व्यक्ति की जान ले सकते हैं, यदि वह कोई मृत्युदंड का अपराध करता है तो भगवान के प्रतिनिधियों के रूप में उन्हें वह सजा देनी होती है। अब इसका मतलब यह नहीं है कि हम उसे उस पुस्तक में प्रचुर मात्रा में

पाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि मोज़ेक कानून विकसित होने पर इसे हर मामले में पालन किया जाना चाहिए क्योंकि जब आप संख्या 35 पर पहुंचते हैं तो आप पाते हैं कि आकस्मिक मौतों के लिए शरण के शहर हैं जो पूर्व-निर्धारित हत्या से अलग हैं। इसलिए यह भेद किया गया है और मैं उस अध्याय को नहीं पढ़ूंगा लेकिन मृत्युदंड मनुष्य के जीवन की रक्षा के लिए दिया गया एक दैवीय अध्यादेश है। यह अभी भी एक ऐसा विषय है जिस पर गरमागरम बहस चल रही है।

भगवान ने उन जानवरों को मनुष्य को रक्त न खाने की शर्त के साथ जीविका और जीवन के लिए दिया है। खैर मुझे ऐसा लगता है कि यह लैव्यव्यवस्था 17:11 से संबंधित है, मेरा मानना है कि यह लैव्यव्यवस्था 17:11 है, "क्योंकि शरीर का जीवन लोह में है, मैं ने इसे तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त करने के लिये वेदी पर तुम्हें दिया है।" यह आत्माओं के लिए प्रायश्चित्त करने वाला लहू है।" मुझे ऐसा लगता है कि इसका महत्व बलि प्रणाली के साथ आगे के विधान के संबंध में है और मुझे ऐसा लगता है कि जब आप नए नियम में आते हैं तो बलि प्रणाली को छोड़ दिया जाता है। आपके पास उससे संबंधित सभी नियम हैं और साथ ही स्वच्छता और अशुद्धता से संबंधित सभी नियम हैं। प्रभु ने पतरस से कहा, किसी भी वस्तु को अशुद्ध मत मानना। ऐसा प्रतीत होता है कि जब कोई व्यक्ति आता है तो वह सब समाप्त हो जाता है जिसने वास्तव में वह सब पूरा कर लिया है जिसकी वह आशा कर रहा था। इसलिए मैं यह नहीं कहूंगा कि प्रावधान उस अवधि के बाद भी जारी रहता है जब अनुष्ठान कानून प्रभावी थे। अब मुझे लगता है कि यह तर्क दिया जा सकता है कि यह मोज़ेक नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह बलि प्रथा के सन्दर्भ में मार्ग के अधिक निकट है।

ठीक है, जहां तक मौत की सजा का सवाल है या सिर्फ मौत की सजा से परे, तलवार की शक्ति का उपयोग करने के लिए सरकारी प्राधिकारी के पदों पर बैठे व्यक्ति के अधिकार या अधिकार की कमी मुझे रोमियों 13 में पॉल द्वारा स्पष्ट रूप से बताई गई लगती है। शांतिवाद के पूरे मुद्दे पर और किसी दूसरे व्यक्ति की जान लेना सही है या नहीं। आपने रोमियों 13 में पढ़ा कि प्रत्येक आत्मा को उच्च शक्ति के अधीन होना चाहिए। पद 2, "जिसने शक्ति का विरोध किया उसने परमेश्वर के अध्यादेश का विरोध किया।" पद 3, "क्योंकि शासक भले कामों से नहीं, परन्तु बुराई से डरते हैं।" पद 4, "क्योंकि वह भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है, परन्तु यदि तुम बुरा काम करते

हो, तो डरो, क्योंकि वह व्यर्थ तलवार नहीं उठाता, क्योंकि वह परमेश्वर का सेवक है, और जो बुराई करता है उस पर क्रोध भड़काने के लिये पलटा लेनेवाला है। ” ऐसा प्रतीत होता है कि यह तलवार की शक्ति रखने के सरकार के अधिकार का एक मजबूत अनुमोदन है और मुझे लगता है कि उसी मुद्दे को उत्पत्ति 9 में वापस संबोधित किया गया है। पॉल उस शक्ति से इनकार नहीं करता है, वह इसका समर्थन करता प्रतीत होता है। ईश्वर ने मानव सरकारों को अधिकार दिया है। उस अधिकार का दुरुपयोग और दुरुपयोग किया जा सकता है और कई सरकारों ने ऐसा किया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सिद्धांत को नकार दिया गया है।

2. नूह की वाचा जो आपको उत्पत्ति 9:8-17 में मिलती है

खैर वह एक था. "मानव और पशु जीवन के प्रसार और रखरखाव के लिए निर्देश।" बी। है, "नूह की वाचा जो आपको उत्पत्ति 9:8 से 17 में मिलती है।" परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, "मैं अब तुम्हारे साथ, और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश के साथ, और तुम्हारे साथ रहने वाले सभी जीवित प्राणियों के साथ, पक्षियों, घरेलू पशुओं और सभी जंगली जानवरों के साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ। जहाज़ में तुम्हारे साथ--पृथ्वी पर हर जीवित प्राणी। मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा स्थापित करता हूँ: बाढ़ के पानी से सभी जीवन फिर कभी नष्ट नहीं होंगे; पृथ्वी को नष्ट करने के लिये फिर कभी जलप्रलय न होगा।" और परमेश्वर ने कहा, 'यह उस वाचा का चिन्ह है जो मैं अपने और तुम्हारे बीच और तुम्हारे साथ रहने वाले सभी जीवित प्राणियों के बीच बांधता हूँ, यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक वाचा है: मैंने अपना इंद्रधनुष बादलों में स्थापित किया है, और यह का चिन्ह होगा मेरे और पृथ्वी के बीच की वाचा। जब भी मैं पृथ्वी पर बादल लाऊंगा और बादलों में इंद्रधनुष दिखाई देगा, तब मैं तुम्हारे और हर प्रकार के सभी जीवित प्राणियों के साथ अपनी वाचा को याद करूंगा। जल फिर कभी बाढ़ बनकर समस्त जीवन को नष्ट नहीं करेगा। जब भी बादलों में इंद्रधनुष दिखाई देगा, मैं उसे देखूंगा और भगवान और पृथ्वी पर हर प्रकार के सभी जीवित प्राणियों के बीच की शाश्वत वाचा को याद करूंगा।' इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, 'यह उस वाचा का संकेत है जो मैंने अपने और पृथ्वी पर सभी जीवन के बीच स्थापित की है।' इससे पहले अस्तित्व में नहीं था. लेकिन अब

इसका एक विशेष महत्व है और जब हम इंद्रधनुष देखते हैं तो हम सोचने लगते हैं कि हमें भगवान के वादे की याद आती है, कि वह पृथ्वी को फिर कभी नष्ट नहीं करेगा जो कि वैध है लेकिन आप पाठ में देखते हैं, श्लोक 15, “यहोवा कहता है, मैं स्मरण रखूंगा, कि जब मैं पृथ्वी पर बादल लाऊंगा, तब बादलों में एक धनुष दिखाई देगा, और मैं स्मरण रखूंगा।” आप इसे मानवाकृतिक या मानवाकृतिक प्रकार की अभिव्यक्ति कहते हैं जहां भगवान खुद का वर्णन करने के लिए मानवीय शब्दों में बात करते हैं लेकिन वह धनुष एक अनुस्मारक है कि भगवान ने वह वादा किया है। मुझे लगता है कि विचार यह है कि इस बिंदु से आगे पृथ्वी को उस क्षेत्र के रूप में संरक्षित किया जाएगा जिसमें भगवान की मुक्ति की योजना पर काम किया जाएगा और यह अंतिम निर्णय तक, समाप्ति तक जारी रहेगा। लेकिन बीच की अवधि में, भगवान फिर कभी वह नहीं करने जा रहे हैं जो उन्होंने बाढ़ लाने में इस बिंदु पर किया था।

7. कनान पर अभिशाप ठीक है, आइए 7 पर चलते हैं जो अध्याय 9, "कनान पर अभिशाप" का उत्तरार्द्ध भाग है। श्लोक 18 और 19 में नूह के तीन पुत्रों के बारे में बताया गया है और फिर तुरंत आपको यह कहानी श्लोक 20 से लेकर अध्याय के अंत तक मिलती है। इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, "यह उस वाचा का चिन्ह है जो मैंने अपने और पृथ्वी के समस्त जीवन के बीच स्थापित की है।" नूह के जो पुत्र जहाज से निकले वे शेम, हाम और येपेत थे। (हाम कनान का पिता था।) ये नूह के तीन पुत्र थे, और उन्हीं से वे लोग निकले जो पृथ्वी पर तितर-बितर हो गए। नूह, एक मिट्टी का आदमी, एक अंगूर का बाग लगाने के लिए आगे बढ़ा। जब उस ने उसका कुछ दाखमधु पी लिया, तब वह मतवाला हो गया, और अपने तम्बू के भीतर नंगा होकर लेट गया। कनान के पिता हाम ने अपने पिता की नग्नता देखी और बाहर अपने दो भाइयों को बताया। परन्तु शेम और येपेत ने एक कपड़ा लेकर अपने कन्धे पर रख लिया; तब वे पीछे की ओर चले और अपने पिता का नंगापन ढांप दिया। उनके चेहरे दूसरी ओर कर दिये गये ताकि वे अपने पिता का नंगापन न देख सकें। जब नूह शराब से जागा और उसे पता चला कि उसके सबसे छोटे बेटे ने उसके साथ क्या किया है, तो उसने कहा, 'कनान शापित हो! वह अपने भाइयों का सबसे नीच दास होगा।' उसने यह भी कहा, शेम का

परमेश्वर यहोवा धन्य है! कनान शेम का दास हो। भगवान येपेत के क्षेत्र का विस्तार करें; येपेत शेम के तम्बू में रहे, और कनान उसका दास हो।"

एक। हाम और गुलामी अब यह बाइबिल के कई अंशों में से एक है लेकिन यह मुख्य रूप से वह है जिसका उपयोग अक्सर इस देश में गुलामी और अलगाव दोनों का समर्थन करने के लिए किया जाता है। आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ 11 के शीर्ष पर, दूसरे भाग में एक खंड का उल्लेख है। जेआर बसवेल III, "एस लवरी, सेग्रीगेशन, एंड स्क्रिप्चर।" आप जेआर बसवेल जूनियर के धर्मशास्त्र से परिचित हो सकते हैं। यह उनका बेटा है जो एक मानवविज्ञानी है और उसने यह छोटी सी किताब लिखी है। पृष्ठ 16 पर वह कहते हैं, "गुलामी के अधिकांश समर्थक, यदि वे नीग्रो को एक इंसान मानते थे, तो उन्होंने अपने संपूर्ण बाइबिल मामले को इस विश्वासपूर्ण धारणा पर आधारित किया कि नीग्रो जाति की पहचान नूह के दूसरे बेटे हाम के वंशज के रूप में की जानी चाहिए। इस प्रकार, स्वचालित रूप से मिस्र, इथियोपिया और हैम की संतान के फैलाव पर कब्जा करने वाले अन्य भूमि पर लोगों के किसी भी और हर उल्लेख को नीग्रो का संदर्भ माना जाता था, इस तथ्य के बावजूद कि ऐतिहासिक समय में ये आबादी गैर-नीग्रो थी। इस निष्कर्ष को सही ठहराने के लिए कि वे नूह के अभिशाप के अधीन थे, हैम के साथ नीग्रो की विशेषताओं के संबंध को साबित करने के लिए दास प्रथा के तर्कों को जिस हद तक आगे बढ़ाया गया वह पूरी तरह से शानदार था। वह इस पर अधिक विस्तार से चर्चा करता है लेकिन हम इस अंश को देखते हैं जहां यह कहा गया है, "कनान, वह अपने भाइयों के लिए दासों का सेवक होगा।" पाठ का उपयोग अक्सर गुलामी और अलगाव का बचाव करने के लिए किया गया है।

बी। कनान पर अभिशाप अब सवाल यह है कि क्या इस तरह के दृष्टिकोण का कोई आधार है? मुझे लगता है कि उत्तर स्पष्ट है, "नहीं।" लेकिन आइए परिच्छेद को देखें। यह कहानी आयत 19 में नूह के तीन बेटों के संदर्भ में पेश की गई है। "ये नूह के तीन पुत्र, शेम, हाम और येपेत हैं। हाम कनान का पिता है और पट्टी पर पूरा शब्द उन्हीं का था।" दिलचस्प बात यह है कि श्राप उस घटना के बाद सुनाया जाता है जो हाम पर नहीं है। हाम और नूह के साथ घटना, पद 25 में श्राप कनान पर

है। यह हाम पर नहीं है; कनान हाम का चौथा पुत्र है। यदि आप अध्याय 10 श्लोक 6 को देखें तो आप पढ़ते हैं, "हाम के पुत्र कुश, मित्रैम, पूत और कनान थे।" तो चार बेटों में से, कनान चौथा है, यह जरूरी नहीं है कि वे उसी क्रम में आए हों लेकिन यह संभव है। लेकिन किसी भी स्थिति में श्राप हाम के पुत्रों में से एक कनान पर है। मुझे नहीं लगता कि हमें नूह के उस कथन को केवल क्रोध और क्रोध की अभिव्यक्ति के अर्थ में एक अभिशाप के रूप में समझना चाहिए। बल्कि ये एक भविष्यवाणी है। मुझे लगता है कि नूह यहां वास्तव में पूरे अनुभव के रहस्योद्घाटन के द्वारा बोलता है क्योंकि वह क्या होगा और नूह के इन तीन पुत्रों के वंशजों से निकलने वाली रेखाओं के बारे में एक भविष्यवाणी बयान दे रहा है। तो यह सिर्फ नूह की दुर्भावना की अभिव्यक्ति नहीं है। वह इन तीन श्लोकों में जिन चीजों के बारे में बात करता है, उन्हें मानवीय तरीकों से नहीं जान सका। वे प्रभावशाली वक्तव्य हैं इसलिए वे इस बात का अनावरण कर रहे हैं कि क्या होगा।

बेशक, सवाल यह है कि हाम के बजाय कनान पर अभिशाप क्यों है? हाम के पुत्र के रूप में कनान ने क्या किया? इसका उत्तर देना कठिन है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो पाठ में सीधे प्रश्न को संबोधित करता हो। मुझे लगता है कि यह सुझाव देना उचित है कि पवित्र आत्मा द्वारा नूह ने उस विशेषता को समझा और देखा जो हाम में व्यक्त की गई थी और उसने जो किया वह कनान में उसके बेटे और शायद उससे भी अधिक हद तक कायम रहेगा। इसके अलावा, यह कनान या कम से कम कनान के वंशज हैं जिनके साथ इस्राएली बाद में बड़े पैमाने पर संपर्क में आते हैं। तो शायद इसका उत्तर पवित्र आत्मा द्वारा नूह की धारणा में निहित है कि उसमें दिखाया गया गुण उसके बेटे कनान में और भी अधिक मजबूती से मौजूद है। यदि आप लैव्यव्यवस्था 18 को देखें तो आपके पास एक अध्याय है जिसमें कनानियों के बारे में बहुत सी बातें सूचीबद्ध हैं। यदि आप लैव्यव्यवस्था 18:24 में देखते हैं और उसका अनुसरण करते हुए कहते हैं, "अपने आप को और इनमें से किसी को भी अशुद्ध न करना, क्योंकि इन सब में वे जातियां अशुद्ध हैं जिन्हें मैं ने तुम्हारे साम्हने से निकाल दिया है।" दूसरे शब्दों में, कनान देश के निवासियों द्वारा, भूमि को अपवित्र किया गया है। "इसलिए मैं उस पर होने वाले अधर्म का दौरा करता हूं।" पद 27, "क्योंकि ये सब घृणित काम उस देश के मनुष्यों ने जो तुम से पहिले उस देश में थे, किए हैं, वे अशुद्ध हो गए हैं।" श्लोक 30, "इसलिये तुम

मेरे नियम का पालन करना, कि जो घृणित रीति तुम्हारे पहिले से होती थी उन में से कोई न करना, और अपने आप को अशुद्ध न करना, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।" अब अध्याय के पूरे पहले भाग के उन घृणित रीति-रिवाजों में से एक यौन अपमानजनक मोड़ की बात करता है और शायद अभिशाप कनान पर आता है क्योंकि नूह कनानियों में उस प्रवृत्ति को देखता है जो कुछ हद तक पिता हाम में प्रदर्शित होती है।

हैम का अपराध क्या था? इस बिंदु पर मैं जो करना चाहता हूँ वह शायद मैं उस पाठ पर एक और टिप्पणी करूँगा क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ वह शाप और आशीर्वाद की सामग्री को देखना है जो उच्चारित किए जाते हैं क्योंकि वे महत्वपूर्ण हैं और उनके दूरगामी अनुप्रयोग हैं। लेकिन मुझे बस एक और प्रश्न पूछने दीजिए और फिर हम आज के लिए रुकेंगे। कनान का अपराध या हाम का अपराध क्या था? आपने पढ़ा “कनान के पिता हाम ने अपने पिता की नग्नता देखी और बाहर अपने दो भाइयों को बताया। शेम और येपेत ने अपने वस्त्र लेकर अपने दोनों कन्धों पर रखे, और पीछे जाकर अपने पिता का नंगापन ढांप दिया। इसलिये उनके मुख पीछे की ओर थे और उन्होंने अपने पिता का नंगापन नहीं देखा।”

अब हाम का अपराध क्या था, अब उसने क्या किया? कार्लिन डारिक्स ने कहा कि यह बेशर्म कामुकता का प्रदर्शन था, जो शेम और जेफेथ भाइयों की श्रद्धापूर्ण विनम्रता के विपरीत था। ऐसा प्रतीत होता है कि हाम को अपने पिता की लज्जा से आनन्द आता था। वह उसे अपने भाइयों के सामने उजागर करना चाहता था। यह निश्चित रूप से पिता के प्रति अनादर और शायद हैम के हिस्से में एक विकृत प्रकार की कामुक प्रकृति को दर्शाता है। अब मुझे ऐसा लगता है कि आप अपराध के बारे में इतना ही कह सकते हैं। कुछ लोग और अधिक जानने की कोशिश करते हैं और वे श्लोक 24 की ओर इशारा करते हैं, "नूह अपनी शराब से जाग गया और जानता था कि उसके छोटे बेटे ने उसके साथ क्या किया था।" वे इस बात पर जोर देते हैं कि कुछ अवश्य किया गया होगा और कुछ का सुझाव है कि जब श्लोक 22 में कहा गया है कि हाम ने अपने पिता की नग्नता देखी तो यह कुछ विकृत यौन कृत्य के लिए "नग्नता देखी" की एक व्यंजना है। मुझे नहीं लगता कि ऐसा

कहने का निष्कर्ष निकालने का कोई वास्तविक अच्छा आधार है। यह संभव है कि आप उसे एक व्यंजना के रूप में और एक अलंकार के रूप में समझ सकें और यह कह सकें कि वस्तुतः जो कहा गया है, उससे कहीं अधिक है। फिर आपको श्लोक 23 को उसके साथ फिट करना होगा और श्लोक 23 से ऐसा लगता है कि यह सिर्फ पिता के प्रदर्शन की बात है।

मैं अपनी चर्चा यहीं छोड़ दूँगा और फिर अगली बार श्राप और आशीर्वाद की विषयवस्तु पर ध्यान दूँगा।

चेल्सी जॉनसन द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट
द्वारा पुनः सुनाया गया